स्वामी दयानंद जी का दर्शन

दयानंद के दर्शन की ज्ञान मीमांसा

दयानंद जी इस भौतिक जगत के अस्तित्व एवं इसके ज्ञान को आवश्यक मानते थे, लेकिन वे जिस ज्ञान को सर्वोच्च एवं सद्ज्ञान मानते थे वह था आध्यात्मिक जगत का ज्ञान।

दयानंद के दर्शन की तत्व मीमांसा

दयानंद जी ब्रह्मा,जीवात्मा और पदार्थ को स्वतंत्र मानते थे। इसके अनुसार इस संसार का करता ब्रह्म है और वह अमर है, अतः यह जगत वास्तविक है, यथार्थ है। यह मानते हैं कि ब्राह्म निराकार ,सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ,सर्वव्यापक ,अनादि, आज्ञाकारी ,दयालु और भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाने वाला है।

दयानंद के दर्शन की आचार मीमांसा

दयानंद के अनुसार मुक्ति प्राप्त करना ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए और इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब वेद, ज्ञान , कर्म और यज्ञ आदि क्रियाओं को संपन्न किया जाए।

दयानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ

दयानंद जी के अनुसार शिक्षा आंतरिक शुद्धि के रूप में एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो कि गर्भावस्था काल से ही आरंभ हो जाती है । शिक्षा में सत्य आचरण की योग्यता प्रदान करती है। दयानंद जी के अनुसार शिक्षा है, जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों को प्राप्त करें और अविद्या आदि दोषों को त्याग कर सदैव आनंद में जीवन व्यतीत कर सकें।

दयानंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य

1-मुक्ति प्राप्ति

2-सामाजिक विकास

3-चारित्रिक विकास

4-शारीरिक गुणों का विकास

5-ज्ञान का उद्देश्य

दयानंद के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम

दयानंद जी ने अलग-अलग अवस्थाओं में अलग-अलग पाठ्यक्रम के बारे में बताया है । जिसके अंतर्गत आदतों का निर्माण, भाषा शिक्षा, खेलकूद की शिक्षा, गुरुकुल में प्रवेश, योग ,वेदांत, मीमांसा ,भूगोल, शिल्प कला ,खगोल आदि शिक्षा के बारे में चर्चा की है

दयानंद के अनुसार शिक्षण विधियां

1-निरीक्षण विधि

2-स्वाध्याय विधि

3-उपदेश या व्याख्या विधि

4-प्रश्नोत्तर विधि

5-व्यवहारिक विधि

6-तार्किक विधि

दयानंद के अनुसार शिक्षक की भूमिका

शिक्षक शिक्षार्थी के मध्य निकट का संबंध होना चाहिए। शिक्षक और शिक्षार्थी को एक दूसरे से कुछ छुपाना नहीं चाहिए । शिक्षक को गुणों की खान उसका व्यक्तित्व एवं चरित्र उत्तम होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार आचार्य वह है, जो शब्दों उनके अर्थ और उनसे उनके संबंधों को जानता है।

दयानंद के अनुसार शिक्षार्थी

बालकों से सत्य बोलने, धर्म का आचरण करने, ध्यान लगाकर अध्ययन करने, माता-पिता ,आचार्य और अतिथि का आदर सम्मान करने की आशा की जाती है । वह शिक्षक के चरणों में बैठकर उपदेश सुने। सदैव जिज्ञासा की प्रवृत्ति होश में नियमित संयमित ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होना चाहिए।

दयानंद के अनुसार विद्यालय

दयानंद जी का मानना था, कि बालकों को प्रारंभिक शिक्षा परिवार द्वारा ही मिलनी चाहिए और इसके बाद ही 8 वर्ष की आयु में बालक के उपनयन संस्कार के बाद गुरुकुल में प्रवेश कर आना चाहिए। यह गुरुकुल शहर के कोलाहल के वातावरण से दूर एकांत में प्रकृति की गोद में स्थित होने चाहिए।

दयानंद के अनुसार अनुशासन

दयानंद जी कठोर अनुशासन के समर्थक थे।

गुण या आधुनिक शिक्षा में दयानंद जी का योगदान

1-दयानंद जी ने बताया कि शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण, मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मुक्ति है

2-बालक को आवश्यकता अनुसार दंड दिया जाना चाहिए।

3-यह पुनर्जन्म और आशावादी विचारों में आस्था रखते थे।

4-प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।

5-बालक बालिका और शिक्षकों तीनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

<u>दोष</u>

1-दयानंद जी का शिक्षण विधि में मत है कि खेल द्वारा शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। जो कि आज के आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विरोध करती है।

2-विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा के बदले नैतिक, आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्षता की शिक्षा दी जानी चाहिए।

3-बाहर बच्चों को स्कूल भेजने के लिए राज नियम का पक्ष लेते हैं और जो भारत जैसे गरीब और अधिकतर अशिक्षित देश में लागू करना कठिन है।